A–0458

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MASL–607

M.A. Sanskrit (MASL)

गद्य एवं पद्य काव्य भाग–02

Examination, 2026 (Feb.)

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×19=38

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. नैषधीयचरित महाकाव्य के नायक श्रीहर्ष चरित्र चित्रण कीजिए।

2. बुद्धचरित की कथा का संक्षिप्त सार लिखिए।

3. निम्नलिखित श्लोक में से किसी एक श्लोक की व्याख्या कीजिए–

पूर्वं तु सा चन्द्रमिवाभ्रमण्ये स्पप्ने ददर्शात्मवपुर्विशन्तम्।

नागेन्द्रमेकं धवलं न धीरा तस्मानिमित्ताद्विभयाञ्चकार॥

अथवा

तस्मिन् वने श्रीमति राजपत्नी प्रसूतिकालं समवेक्षमाणा।

शय्यां वितानोपहितां प्रपेदे नारीसहस्त्रेरभिनन्द्यमाना॥

4. निम्न में से किसी एक श्लोक की व्याख्या कीजिए–

रसैः कथा यस्य सुधाऽवधीरिणी

नलः स भूजानिरभुद्गुणाभ्दुतः।

सुवर्णदण्डैकसितातपत्रित–

ज्वलत्प्रतापवलिकीर्तिमण्डलः॥

अथवा

अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी

त्रयीव नीताऽगगुणेन विस्तरम्।

अगाहताऽष्टादशां जिगीषया

नवद्वयद्वीपपृथग्जयश्रियाम्॥

5. संस्कृत महाकाव्य परंपरा में नैषधीयचरित का स्थान स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. नैषधीय चरित में प्रयुक्त रस अलंकार की विवेचना कीजिए।
2. नैषधीयचारितं के नायक नल का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. महाकाव्य परंपरा में नैषधीय चरित का स्थान निर्धारित कीजिए।
4. मोक्षाय चेद्वा वनमेव गच्छेत् तत्वेन सम्यक् स विजित्य सर्वान्।
   मतान् पृथिव्यां बहुमानयेतः राजेत शैलेषु यथा सुमेरूः॥
   श्लोक की व्याख्या कीजिए।
5. सा लुम्बिनी नाम्नी वने मानोज्ञे ध्यानप्रदे देववनादनूने।
   वासेच्छया प्राह पतिं प्रतीता सत्वानिभं दोहदमामनन्ति॥
   श्लोक की व्याख्या कीजिए।
6. साहियिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से बुद्धचरित महाकाव्य का महत्व स्पष्ट कीजिए।
7. भाषा, शैली और अलंकार की दृष्टि से नैषधीयचरित का मूल्यांकन कीजिए।
8. बुद्धचरित की कथा की आलंकारिक दृष्टि से समीक्षा कीजिए।

****